

इण्टरमीडिएट स्तर के विद्यार्थियों की गणित विषय में अध्ययन की समस्याओं का सृजनात्मकता के संदर्भ में अध्ययन

(प्रमोद कुमार, शोध छात्र, शिक्षा संकाय, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय,
गोरखपुर, उत्तर प्रदेश, भारत)

Abstract

The greater curiosity of Humans for gaining knowledge has led them to have a great pile of knowledge. They have distributed this huge pile into various important subjects for the convenience of study. Mathematics is one of these subjects. Since mathematics is practically related to human life the methods of its teaching and learning are also important. The researcher has felt during studies and teaching at school level, that students do not take proper interest in mathematics due to the problems related to its learning. These problems are directly related to various factors such as socio-economic status, Educational achievement, Intellectual ability as well as creativity of students. Since the researcher has utmost interest in mathematics, he decided to undertake such a work related to the problems of learning Mathematics in reference to creativity of +2 level students.

Keywords: *Intermediate Students, Problems related to mathematics, creativity.*

मानव जीवन में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है। शिक्षा एक ऐसा साधन है जिससे व्यक्ति के जीवन को सार्थक बनाया जा सकता है। शिक्षा के द्वारा ही बालक के व्यवहार में परिवर्तन एवं परिमार्जन किया जाता है। बालक का विकास उसकी जन्मजात विशेषताओं, प्रवृत्तियों और रुचियों के अनुसार होता है; इनके आधार पर ही बालक के सर्वांगीण विकास का प्रयत्न किया जा सकता है। इस प्रक्रिया में यह आवश्यक है कि विद्यार्थी के मूल आधारों, प्रकृति, मानसिक स्तर, रुचियों, बौद्धिक योग्यताओं, व्यक्तित्व एवं उसकी आवश्यकताओं आदि का ज्ञान प्राप्त कर उसे विषयों का चयन करने दिया जाय जिससे विद्यार्थियों में अन्तर्निहित शक्तियों एवं गुणों को बेहतर रूप में प्रकट और विकसित किया जा सके। शिक्षा में विज्ञान विषय का विशेष महत्व है इस विषय की जननी के रूप में गणित का अमूल्य योगदान है। गणित एक ऐसा विषय है जो विद्यार्थियों के मस्तिष्क को तीक्ष्णता एवं तार्किकता प्रदान करता है। इस विषय की वर्तमान में प्रासंगिकता और अधिक हो गयी है, क्योंकि विज्ञान एवं तकनीकी के वर्तमान युग में गणित आर्थिक विकास के साधन के रूप में समाज में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है। अपनी इस क्रियात्मक नियति के कारण गणित, भौतिक अनुसंधान का भी एक प्रमुख साधन बन गया है। अनुसंधान में गणित की महत्ता का वर्णन करते हुए बर्थलाट ने कहा है “गणित भौतिक अनुसंधान का एक आवश्यक उपकरण है” (थामस, 2008–09) गणित विषय के इस स्वरूप पर चिन्तन करने से स्पष्ट हो जाता है कि विज्ञान विषयों के लिए अभिव्यक्ति का साधन गणित है। रोजर बेकन ने इसके सन्दर्भ में कहा है “गणित विज्ञानों का प्रवेश द्वार एवं कुँजी है। चूँकि जो व्यक्ति गणित से अनभिज्ञ है वह विज्ञानों और विश्व की वस्तुओं की जानकारी प्राप्त नहीं कर सकते, इसलिए गणित की उपेक्षा सम्पूर्ण ज्ञान के लिए घातक है। इससे भी अधिक खराब यह है कि ऐसे अनभिज्ञ मनुष्य न तो अपनी इस अनभिज्ञता को जानते हैं और न ही इसका उपचार कर सकते हैं।” (नेगी, 2005)

उपर्युक्त के आधार पर यह कहा जा सकता है कि गणित विषय की अनभिज्ञता, विज्ञान विषयों की जानकारी में अवरोध उत्पन्न करती है। अर्थात् भौतिकी एवं जैव विज्ञानों में ज्ञान ग्रहण करने एवं प्रस्तुतीकरण के लिए गणित एवं गणितीय विधियाँ ही एकमात्र साधन हैं इस आलोक में कोठारी आयोग (1964–66) के अनुसार “ हम इस बात पर बल देते हैं कि गणित एवं विज्ञान को स्कूल पाठ्यचर्या में महत्वपूर्ण विषय बनाया जाय, इसलिए हम सिफारिश करते हैं कि गणित स्कूल शिक्षण के पहले दस सालों में भी सभी छात्रों को सामान्य

शिक्षा के एक भाग के रूप में अनिवार्यतः पढ़ाया जाय। इसके अतिरिक्त औसत योग्यता से अधिक योग्यता वाले छात्रों के लिए, माध्यमिक अवस्था में इन विषयों में विशेष पाठ्यक्रम की व्यवस्था की जाय। ये कार्यक्रम तभी उपयोगी हो सकते हैं, जब गणित पाठ्यचर्याओं को पुनः संगठित कर आधुनिकतम बनाया जाय, शिक्षण पद्धति में पुनः शक्ति का संचार किया जाय और विषय शिक्षण के लिए उचित सुविधायें दी जाय।” (नेगी, 2005)

इण्टरमीडिएट स्तर पर जब विषय का विशिष्टीकरण हो जाता है तो प्रत्येक विषय के व्यापक अध्ययन की आवश्यकता होती है। इस स्तर पर प्रायः गणित विषय को एक कठिन विषय के रूप में देखा जाता है। परन्तु वास्तविकता इसके ठीक उलटी होती है। यदि शिक्षक गणित विषय के अध्ययन की समस्याओं पर आवश्यकतानुसार ध्यान देते हुए उचित समय पर उनका निराकरण करता जाय तो गणित विषय आसान एवं सर्वग्राही बन सकता है। इसके साथ ही यह भी आवश्यक है कि इस विषय का अध्यापन व्यावहारिक एवं लौकिक जीवन के वातावरण को आधार बनाकर प्रायोगिक रूप में करने का प्रयास किया जाय। जिससे गणित विषय और अधिक रोचक लगे एवं विद्यार्थी इसे अधिक ध्यान लगाकर अध्ययन करें।

महत्वपूर्ण पदों की क्रियात्मक परिभाषा :

इण्टरमीडिएट स्तर के विद्यार्थी :- इसका तात्पर्य 12वीं कक्षा में सी.बी.एस.ई. बोर्ड से गणित विषय पढ़ने वाले संस्थागत विद्यार्थियों से है।

गणित विषय में अध्ययन की समस्याएँ :- वे सभी बाधक तत्व जो गणित विषय के अर्थपूर्ण अधिगम में अवरोध उत्पन्न करते हैं अध्ययन की समस्याएँ कहलाते हैं। प्रस्तुत शोधपत्र में अध्ययन की दो प्रमुख समस्याओं को लिया गया है। जो ब्लूम के वर्गीकरण पर आधारित है। जिसके अन्तर्गत ज्ञानात्मक एवं क्रियात्मक समस्याओं पर आधारित प्रश्न हैं।

सृजनात्मकता :- प्रस्तुत शोध पत्र में सृजनात्मकता से तात्पर्य इण्टरमीडिएट स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मक क्षमता से है। जिसके अन्तर्गत विद्यार्थियों के सहज प्रवाह (Fluency), नम्यता (Flexibility) एवं मौलिकता (Originality) पर आधारित विचारों को सम्मिलित किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य : प्रस्तुत अध्ययन निम्नलिखित उद्देश्यों को ध्यान में रखकर पूर्ण किया गया है –

विद्यार्थियों की गणित विषय में अध्ययन की समस्याओं का अध्ययन करना।

गणित विषय के विद्यार्थियों की सृजनात्मक क्षमता का अध्ययन करना।

गणित विषय के विद्यार्थियों में अध्ययन की समस्याओं का उनके सृजनात्मक क्षमता के सन्दर्भ में अध्ययन करना।

परिकल्पना :- प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाएँ निर्मित की गयीं हैं –

छात्र एवं छात्राओं के गणित विषय में अध्ययन की समस्याओं के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है।

छात्र एवं छात्राओं की सृजनात्मक क्षमता के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

छात्र एवं छात्राओं के अध्ययन की समस्याओं एवं सृजनात्मक क्षमता के मध्यमानों के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है।

परिसीमाएँ :-

1. प्रस्तुत अध्ययन गोरखपुर शहर में सी.बी.एस.ई. बोर्ड से गणित विषय का अध्ययन करने वाले कक्षा 12वीं के संस्थागत विद्यार्थियों तक सीमित है।

2. प्रस्तुत अध्ययन में गणित विषय के अध्ययन की समस्याओं पर आधारित परीक्षण का निर्माण शोधकर्ता द्वारा किया गया है।

शोध विधि :- प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

शोध उपकरण :- उपकरण के रूप में शोधकर्ता द्वारा गणित विषय में अध्ययन की समस्याओं पर आधारित परीक्षण का निर्माण किया गया एवं उसका प्रशासन किया गया जिसमें गणित विषय के अध्ययन से संबंधित दो समस्याओं (ज्ञानात्मक एवं क्रियात्मक) को लिया गया है। जिनमें ज्ञानात्मक समस्याओं पर आधारित 26 प्रश्न एवं क्रियात्मक समस्याओं पर आधारित 24 प्रश्न को सम्मिलित किया गया।

सृजनात्मक क्षमता के मापन के लिए बाकर मेंहदी द्वारा निर्मित शाब्दिक सृजनात्मकता परीक्षण (2011) का प्रयोग एवं प्रशासन किया गया जिसमें विद्यार्थियों की प्रवाहता (Fluency), नम्यता (Flexibility) एवं मौलिकता (Originality) आधारित क्षमता के मापन के लिए चार कार्यों (Activities) का विवरण दिया गया है।

समष्टि :- इस अध्ययन की समष्टि में पूर्वी उत्तर प्रदेश के ऐसे सभी विद्यार्थी आते हैं जो सी.बी.एस.ई. बोर्ड से गणित विषय में संस्थागत विद्यार्थी के रूप में अध्ययनरत हैं। (बेस्ट, 2009)

प्रतिदर्श :- प्रतिदर्श के रूप में गोरखपुर शहर से यादृच्छिक विधि द्वारा चयनित मात्र दो स्कूलों के कक्षा 12वीं में गणित अध्ययन करने वाले 100 विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है। जिसमें 50 लड़के तथा 50 लड़कियाँ हैं। जिनका विवरण निम्नवत है—

क्रं. सं.	स्कूल का नाम	लड़कों की संख्या	लड़कियों की संख्या	कुल योग
1	एअर फोर्स स्कूल कूड़ाघाट, गोरखपुर।	25	25	50
2	सरस्वती शिशु मन्दिर वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, गोरखपुर।	25	25	50
योग		50	50	100

प्रदत्त संकलन :- प्रदत्त संकलन हेतु चयनित प्रतिदर्श को आवश्यक निर्देश देते हुये परीक्षणों का प्रशासन किया गया तथा निश्चित समय के पश्चात् परीक्षण को संकलित करके फलांकन किया गया।

प्रदत्त विश्लेषण :- प्रदत्त विश्लेषण हेतु अध्ययन उद्देश्य को ध्यान में रखते हुये सम्पूर्ण विद्यार्थियों को अध्ययन की समस्याओं, सृजनात्मक क्षमता तथा अध्ययन की समस्याओं का सृजनात्मक क्षमता पर प्रभाव के रूप में वर्गीकृत किया गया तथा उनके प्राप्तांक ज्ञात किए गये। प्राप्तांकों के विश्लेषण हेतु इनकी अलग-अलग आवृत्ति विवरण तालिका बनायी गयी तथा उनका पृथक-पृथक मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन ज्ञात किया गया तथा दो मध्यमानों में अन्तर की सार्थकता की जाँच हेतु क्रान्तिक अनुपात की गणना की गयी। (गुप्ता, 2005) गणना से प्राप्त मानों का विवरण निम्नलिखित प्रकार से है।

तालिका

विभिन्न आधारों पर वर्गीकृत विद्यार्थियों के प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात—

क्रं. सं.	आधार	समूह	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	विश्वसनीयता स्तर	
						.05	.01
1	अध्ययन की समस्याएँ	छात्र	9.81	2.079	0.330	सार्थक नहीं है	सार्थक नहीं है
		छात्राएँ	9.74	2.196			
2	सृजनात्मक क्षमता	छात्र	39.05	1.98	4.34	सार्थक अन्तर है	सार्थक अन्तर है
		छात्राएँ	40.81	2.07			
3	अध्ययन की समस्याओं का सृजनात्मक क्षमता पर प्रभाव	छात्र	9.81	2.079	72.01	सार्थक अन्तर है	सार्थक अन्तर है
		छात्राएँ	39.05	1.98			
4	अध्ययन की समस्याओं का सृजनात्मक क्षमता पर प्रभाव	छात्राएँ	9.74	2.196	72.79	सार्थक अन्तर है	सार्थक अन्तर है
		छात्राएँ	40.81	2.07			

परिणामों की व्याख्या :— प्रदत्त विश्लेषणोपरान्त जो भी परिणाम प्राप्त हुये उन्हें उपर्युक्त तालिका में प्रदर्शित किया गया है। जिनकी क्रमशः व्याख्या निम्नवत है —

- अध्ययन की समस्या के आधार पर :— इसके आधार पर वर्गीकृत प्राप्तांकों के मध्यमान छात्रों एवं छात्राओं के लिए क्रमशः 9.81 एवं 9.74 प्राप्त हुये जिनके प्रमाणिक विचलन क्रमशः 2.079 एवं 2.196 प्राप्त हुये तथा क्रान्तिक अनुपात का मान 0.330 प्राप्त हुआ। यह मान विश्वसनीयता के 0.5 तथा 0.1 स्तर पर सार्थक नहीं है, जो यह प्रदर्शित करता है कि छात्र एवं छात्राओं के गणित विषय में अध्ययन की समस्याएँ एक समान हैं।
- सृजनात्मक क्षमता के आधार पर :— सृजनात्मकता के आधार पर वर्गीकृत प्राप्तांकों के मध्यमान क्रमशः छात्रों एवं छात्राओं के लिए 39.05 एवं 40.81 प्राप्त हुये, जिनके प्रमाणिक विचलन क्रमशः 1.98 एवं 2.07 प्राप्त हुये तथा क्रान्तिक अनुपात का मान 4.34 प्राप्त हुआ यह मान विश्वसनीयता के 0.5 तथा 0.1 स्तर पर सार्थक अन्तर प्रदर्शित कर रहा है जिससे सृजनात्मक क्षमता में भिन्नता की स्थिति प्रदर्शित होती है। इसके आधार पर यह स्पष्ट होता है कि छात्राओं की सृजनात्मक क्षमता छात्रों की तुलना में बेहतर स्थिति में है।
- अध्ययन की समस्याओं का सृजनात्मक क्षमता पर प्रभाव के आधार पर :— इसके आधार पर छात्रों के समूहों के मध्यमान क्रमशः 9.81 एवं 39.05 प्राप्त हुये जिनका प्रमाणिक विचलन क्रमशः 2.079 एवं 1.98 तथा क्रान्तिक अनुपात 72.01 प्राप्त हुआ, यह मान विश्वसनीयता के 0.5 तथा 0.1 स्तर पर सार्थक अन्तर प्रदर्शित करता है, इसके आधार पर यह स्पष्ट होता है कि छात्रों में अध्ययन की समस्याएँ उनके सृजनात्मक क्षमता से प्रभावित होती हैं।

इसी प्रकार छात्राओं के समूह के मध्यमान क्रमशः 9.74 एवं 40.81 प्राप्त हुए। जिनका प्रमाणिक विचलन क्रमशः 2.196 एवं 2.07 प्राप्त हुआ तथा क्रान्तिक अनुपात का मान 72.79 प्राप्त हुआ यह मान विश्वसनीयता के 0.5 तथा 0.1 स्तर पर सार्थक अन्तर प्रदर्शित करता है। इसके आधार पर यह स्पष्ट होता है कि छात्राओं में अध्ययन की समस्याएँ सृजनात्मक क्षमता से प्रभावित होती हैं।

निष्कर्ष :- प्रदत्त विश्लेषण एवं व्याख्या के उपरान्त निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये –

- गणित विषय में अध्ययन की समस्याएँ छात्र एवं छात्राओं में समान रूप से विद्यमान हैं।
- गणित विषय में अध्ययनरत छात्राओं की सृजनात्मक क्षमता छात्रों की तुलना में बेहतर स्थिति में है।
- छात्रों एवं छात्राओं में अध्ययन की समस्याएँ एवं सृजनात्मक क्षमता एक दूसरे से प्रभावित होते हैं।

शैक्षिक निहितार्थ :- प्रस्तुत शोध निष्कर्ष से दृष्टव्य है कि इण्टरमीडिएट स्तर पर गणित विषय का अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों में छात्रों तथा छात्राओं में अध्ययन की समस्याएँ एक समान हैं, अर्थात् छात्र एवं छात्राओं दोनों वर्गों में ज्ञानात्मक एवं क्रियात्मक स्तर पर समस्याएँ एक समान हैं। जिसका निराकरण शिक्षकों द्वारा समान रूप से समान शिक्षण विधियों का उपयोग करके, करने की आवश्यकता है तथा छात्राओं की बेहतर सृजनात्मक क्षमता का अध्ययन एवं उपयोग करके, छात्रों की सृजनात्मक क्षमता बढ़ाने का प्रयास किया जा सकता है।

संदर्भ सूची:-

1. थामस, शाजी एवं सेवानी, अशोक (2008-09). **गणित शिक्षण** (प्रथम संस्करण), अग्रवाल पब्लिकेशन्स आगरा-2, पेज नं. 6।
2. नेगी, जे.एस. (2005). **गणित शिक्षण** (तृतीय संस्करण), आगरा: विनोद पुस्तक मन्दिर पेज नं. 28-29।
3. गैरेट, ई. हेनरी (1989). **शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग** (ग्यारहवां संस्करण), नई दिल्ली: कल्याणी पब्लिशर्स पेज नं. 242-255।
4. गुप्ता, एस.पी. (2005). **सांख्यिकीय विधियाँ** (संशोधित एवं परिवर्द्धित संस्करण) इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन।
5. बेस्ट एण्ड काहन (2009), **रीसर्च इन एजुकेशन** (10th एडिशन), नई दिल्ली : पीएचआई लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड।
6. होटा, एन. (1955), सेक्स डिफरेंसेस इन मैथमेटिकल एण्ड बर्बल रीजनिंग एबिलिटी एमांग फिल्ड-इन्डिपेंडेन्ट एण्ड फिल्ड पिंडेन्ट इन्डिविडुअल्स, **जरनल ऑफ कम्प्यूनिटी गाइडेन्स एण्ड रीसर्च**, वैल्यू 12(3) पेज नं0 205-214.
7. मुखर्जी, सी. (1997) ए रीसर्च रिपोर्ट ऑन जेन्डर वियस इन मैथमेटिक्स। **जरनल ऑफ सेन्टर फॉर पैडागाजिकल स्टडीज इन मैथमेटिक्स**, वैल्यूम सेवन पेज नं0 22-25.
8. परिया, डी. 1996, ए कम्परेटिव स्टडी ऑफ मैथमेटिकल एचिवमेन्ट ऑफ ब्वाज़ एण्ड गर्ल्स ऐट सेकेण्डरी लेबल **जरनल ऑफ सेन्टर फॉर पैडागाजिकल स्टडीज इन मैथमेटिक्स**, पेज नं0 6-8.
9. नागलक्ष्मी, आर.एस. (1996) कन्स्ट्रक्शन ऑफ ए प्राब्लम-साल्विंग एबिलिटी टेस्ट इन मैथमेटिक्स फार सेकेण्डरी स्टूडेन्ट्स एण्ड स्टडी द प्राब्लम-साल्विंग एबिलिटीज ऑफ स्टूडेन्ट्स ऑफ क्लास टेन्थ इन ट्वीन सीटीज़ ऑफ हैदराबाद **पी-एचडी. एडुकेशन**, उस्मानिया यूनिवर्सिटी।

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् लखनऊ महानगर की मलिन बस्तियों के विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास का उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति के संदर्भ में अध्ययन

(नलिनी मिश्रा, सहायक प्रोफेसर, बी.एड., के.एम.सी.यू.ए.एफ., यूनिवर्सिटी, लखनऊ, उ० प्र०, भारत)

Abstract

This paper provides empirical evidence of the educational development of students of the slums of Lucknow city in relation to their socio-economic status. The researcher has used 'Multi Stage Random Sampling Technique' for taking his sample and conducted a survey with the participation of 300 students from 30 aided and non-aided secondary schools situated in the slums of the 3 Jones of Lucknow city U.P., India. Further, he employed Socio-Economic Status Scale (SESS)' by Dr. R. L. Bhardwaj for measuring the socio-economic status and Self developed Educational Development Test Battery (EDTB) for measuring the educational development of students of the slums of Lucknow city and Two Way ANOVA for analysing the data. This study reveals that the socio-economic status of the students e.g. education level of their parents, social status, economic status, environment of their home, family and community etc. directly affects their educational development. Favourable socio-economic circumstances of the parents/guardians of the students positively affects their educational development where as unfavourable one's negatively affects their educational development. In Addison to this the educational development of male students was comparatively better than that of their female counterparts. Further, socio-economic status and their sex differences are interesting significantly for their educational development.

Keywords: Educational Development, Socio-economic Status, Secondary Level, Slums of Lucknow.

मानव जीवन में शिक्षा का अत्यधिक महत्व है। मनुष्य के शरीर, मन एवं आत्मा में निहित सर्वोत्तम शक्तियों के सर्वांगीण प्रकटीकरण को ही शिक्षा कहते हैं। शिक्षा किसी भी आधुनिक, सभ्य, उन्नत और विकसित कहे जाने वाले समाज का अनिवार्य लक्षण है और इसके बिना प्रगति कभी भी पूर्ण और बहुआयामी नहीं हो सकती है। व्यक्ति ही राष्ट्र व समाज की उन्नति का मूल है यदि हमें राष्ट्र को उन्नति एवं प्रगति के पथ पर लाना है तो हमें समाज में सभ्य, सुसंस्कृत, कुशल नागरिकों को बनाना ही होगा और यह कार्य शिक्षा के द्वारा ही सम्भव है। वर्तमान में शिक्षा की सार्थकता वहीं तक है जिस सीमा तक मानवीय आवश्यकताओं, अपेक्षाओं की पूर्ति कर सकें आज की चकाचौंध भरी भौतिकवादी व पूँजीवादी सामाजिक व आर्थिक व्यवस्था में व्यक्ति की अपेक्षाओं एवं आकांक्षाओं का स्तर काफी ऊँचा होता है और उसकी पूर्ति न होने पर व्यक्ति कुन्टा व निराशा का शिकार हो जाते हैं। शिक्षा व्यक्ति के व्यवहार को परिमार्जित करती है। शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति को सभ्य व सुसंस्कृत बनाकर उसे समाज व राष्ट्र का एक उपयोगी नागरिक बनाया जाता है।

शिक्षा किसी भी आधुनिक, सभ्य, उन्नत और विकसित कहे जाने वाले समाज का अनिवार्य लक्षण है और इसके बिना प्रगति कभी भी पूर्ण और बहुआयामी नहीं हो सकती है। व्यक्ति ही राष्ट्र व समाज की उन्नति का मूल है यदि हमें राष्ट्र को उन्नति एवं प्रगति के पथ पर लाना है तो हमें समाज में सभ्य, सुसंस्कृत, कुशल नागरिकों को बनाना ही होगा और यह कार्य शिक्षा के द्वारा ही सम्भव है। सामान्यतया: हमारे समाज में सामाजिक, आर्थिक दृष्टि से उच्च मध्यम व निम्न स्थिति के लोग पाये जाते हैं जिसका प्रभाव बालक के शैक्षिक विकास पर होता है। मनोवैज्ञानिक अध्ययन के परिणाम बताते हैं कि जिन परिवारों की सामाजिक, आर्थिक स्थिति ठीक नहीं होती है, उन परिवारों के बच्चे विद्यालय में अपने साथियों के बीच उचित समायोजन नहीं कर